डॉ० मिथलेश पटेल (हिन्दी विभाग)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर
दिनांक - 23.07.2020

B.A. II

तुलसीदास
(मानस का हंस)

तुलसीदास के चरित्र में भक्ति-भावना का प्रस्फुटन प्रारम्भ से ही देखा जा सकता है किन्तु त्याग-भावना भी उनमें प्रारम्भ से ही विद्यमान है। मोहिनी के प्रति उनके मन में आकर्षण अवश्य उत्पन्न हुआ किन्तु वह भी भक्ति और त्याग-भावना के कारण ही तिरोहित हो गया। कितनी ही सुन्दर नारियों ने उन्हें काम की ओर आकर्षित-उत्प्रेरित करने का प्रयास किया किन्तु तुलसी अविचल रहे। यहाँ तक कि विवाहोपरान्त जिस पत्नी रत्ना-वली को वे हृदय से प्रेम करते थे, एक बार उनके द्वारा कुछ व्यंग्य-वचन कह देने मात्र से कि ते राम की अपेक्षा काम

[illegible] सम्भवत: है उनकी इस आध्यात्मिक एवं -
शक्ति के जीवन द्वार ही खोल दिये।
इन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर गृह
त्याग करने एवं सन्यासी बनने
का दृढ़ निश्चय कर लिया। उनकी
यह त्याग भावना इन पंक्तियों में
देखा जा सकता है —
नारी की आकर्षण शक्ति और स्वरूप
न हो बार हमें राम से विलग
कर दिया, नहीं तो केवल वर्षों में
पड़े आगार तुलसी स्वाभाग्यवान बन
जाता होता। शंकराचार्य स्वयं ही
कहे गए भावनाओं के लिए नारी
नरक का द्वार है। आयु बीतती
जा रही है। यौवन दिनों दिन
ढलता चला जायेगा। जो दिन
जा रहा है वह फिर लौट कर नहीं
आता है। [illegible] काल जगत - नाटक
[illegible] इस समय [illegible] ही
[illegible] यही [illegible] दिन
[illegible] अपनी [illegible] मरे
[illegible] वर्षा न हमें
[illegible] अमर हो, जो
[illegible] नाम [illegible] दे।

[illegible] (3)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] की [illegible] इस विडम्बना के बारे में [illegible] हुए कहना है —

" [illegible] और राम के बीच में चुनाव के [illegible] आने पर [illegible] ही सही [illegible]

[illegible]

[illegible] मेरे मन

(4)

मैं जागी की उसके लुभावने से लुभावना नारी सौन्दर्य भी मेरे मन की कसौटी पर चढ़कर फीका पड़ जाता है। कुछ क्षणों में मुझे अपने प्रलोभन में फँसना चाहा किन्तु राम ने बचा लिया। मेरी भक्ति निष्ठा दूसरे साधुओं के मन में विश्वास जगाने लगी।"

निष्कर्ष - निष्कर्षत: आलोच्य उपन्यास मानस का हंस के नायक गोस्वामी तुलसीदास का चरित्र एक लोकनायक और समन्वयवादी महाकवि के अनुरूप सच्चरित्र, निर्मल, पवित्र, संयमशील उदार, सहृदय, पाण्डित्यपूर्ण, समाज के नैतिक उत्थान में सहायक, कुशल कवि एवं निर्मल प्रेम भावना तथा मानव मात्र के प्रति स्नेह की भावना से आपूरित है। राम भक्ति में उनकी आस्था अडिग है और यही कारण है तुलसी का चरित्र मानव मात्र के लिए एक अलौकिक प्रेरणा का स्रोत रहा है।